13 अप्रैल 2017 को पद्म पुरस्कारों से सम्मानित महानुभावों के सम्मान के अवसर पर माननीया लोक सभा अध्यक्ष का भाषण

1. I am very happy to be present here in the felicitation ceremony of the three masters of their respective fields पद्म विभूषण Dr. K.J. Yesudas, Padamshri Parassala B. Ponnammal (पद्मश्री परसल्ला बी. पोनामल) and Pravasi Samman-2017 honoured Shri V.K. Rajasekharan Pillai (वी.के. राजशेखरन पिल्लई) in the presence of an august gathering under the auspices of Sree Narayan Global Mission. I feel privileged to share the space with all of you.

2. श्री नारायण ग्लोबल मिशन के प्रेरणास्रोत श्री नारायण गुरू केरल के एक क्रांतिकारी व्यक्ति थे। उन्होंने 19वीं और बीसवी शताब्दी के मध्य में केरल में अपने सामाजिक और आध्यात्मिक ज्ञान से एक आंदोलन को सिंचित किया जिसने समाज की दिशा और दशा में आमूल–चूल परिवर्तन ला दिया। एक सफल, संतुलित, समर्पित जीवन जीने की कला गुरू जी ने समाज को दी। उस समय केरल में फैली सामाजिक कुरीतियों को समूल नष्ट करने की दिशा में उनका योगदान उल्लेखनीय है। He was a yogi, a poet and a mystic. The hallmark of his philosophy was 'Advait'.

3. मुझे खुशी है कि श्री नारायण ग्लोबल मिशन श्री गुरू के जीवन मूल्यों पर चलते हुए लोक कल्याण के विभिन्न काम कर रहा है और अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए उन्मुख है।

गुरूजी ने आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक क्षेत्र के अलावा शिक्षा के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किए। He rightly believed that education has the all important role in the progress of the society itself. According to the Guru the ultimate aim of education should be the spiritual self-realization.

4. आज जिन तीन विभूतियों का यहाँ श्री नारायण ग्लोबल मिशन सम्मानित कर रहा है, तीनों मूलतः केरल प्रांत से है। केरल का प्राकृतिक सौंदर्य, सभ्यता और संस्कृति सभी अद्भुत है। केरल को ''ईश्वर का अपना घर God's Own Country'' कहना सर्वथा उपयुक्त है। मानव संसाधन विकास की आधारभूत संरचना के अनुसार भी केरल की उपलब्धियाँ सराहनीय है।

5. अपने–अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान दे कर इन तीनों ने समाज को अपनी कला व योगदान से सिंचित किया है। आप तीनों का साधुवाद। यहां मैं कहना चाहूंगी कि एक व्यक्ति का अथक परिश्रम, उसकी दृष्टि, उसका प्रयास, जब किसी ऊंचे मुकाम पर पहुचता है तो उसके परिवार, समाज और देश सबका कल्याण होता है।

6. The passion of music has no barrier of languages; it is the universal language of our soul. संगीत साधना भारतीय संस्कृति का अटूट अंग है। धर्म से ऊपर उठ कर उस महाशक्ति को समर्पित साधना ही संगीत है। पद्म विभूषण श्री के. जे. येसुदास जी के विषय में मैं यही कहूंगी कि यहाँ वैसे हम सबने उनके गाने बहुत बार गुनगुनाये हैं और अभी भी गुनगुनाते हैं। चाहे वह यमन राग पर आधारित ''जब दीप जले आना'' गीत हो या राग मालकोश पर आधारित गीत ''गोरी तेरा गांव बड़ा प्यारा हो अथवा सिंध भैरवी राग में संगीतबद्ध प्रसिद्ध ठुमरी ''का करूं सजनी आए न बालम'' हो, ये सब मन

को अलंकृत और झंकृत कर देते हैं। संगीत प्रेमी और समीक्षक यह मानते हैं कि उनकी आवाज मन्दिर में जलते दीये की तरह पावन, प्रेरक एवं अलौकिक है। इसके पीछे उनके जीवन की अर्द्धशताब्दी से अधिक वर्षों की संगीत साधना है। वास्तव में, संगीत और कला का आध्यात्मिकता से गहरा संबंध है। संगीत देव वाणी है, उसकी कोई भाषा नहीं होती।

7. Sree Narayana Guru's great message, "One religion and One God for all humanity", influenced young Yesudas in his dealings with his fellow men. Yesudas is fondly called Gana Gandharvan (The Celestial Singer). He is also known as a Cultural Icon of Malayalam language-as well as of its ethnic group spread across the world - due largely to the fact that his songs have been profoundly ingrained into the minds of Malayalam speaking people for five decades. Yesudas's voice is touched by God. He is a yogi, a mystic who lives for music.

8. येसुदास की आवाज़ में एक सम्मोहन है, वाणी और उच्चारण में ऐसा आकर्षण है जो भाषा, धर्म, देश, परदेश की सीमाओं से परे जाकर सभी के मन को मोह लेता है और यह आश्चर्यजनक बात नहीं है कि उन्हें 7 बार सर्वश्रेष्ठ गायक का राष्ट्रीय पुरस्कार, 5 बार फिल्मफेयर अवार्ड और 43 बार केरल, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों के सर्वश्रेष्ठ गायक का पुरस्कार मिल चुका है। भारत सरकार ने उन्हें सन् 1975 में पद्मश्री, सन् 2002 में पद्म भूषण और वर्ष 2017 में पद्म विभूषण जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार से सम्मानित किया है। जैसे काशी–विश्वनाथ मन्दिर के बाहर बिस्मिल्लाह खान का

शहनाई–वादन धर्म और मजहब से परे संगीत के माध्यम से एक आध्यात्मिक आराधना थी, उसी प्रकार, से ही येसुदास जी की वाणी में गाए गए भजन और संस्कृत के श्लोक उसी आध्यात्मिक आराधना की अनुभूति कराते हैं। अपनी मधुर वाणी से वे संगीतप्रेमियों के हृदय को परमेश्वर से जोड़ने का काम करते हैं।

9. महान संगीतकार रवीन्द्र जैन को येसुदास जी की वाणी और गायकी में ऐसा दैवीय और चमत्कारिक आकर्षण नज़र आता था कि उन्होंने येसुदास जी के लिए कहा था कि "If ever he (Ravindra Jain) happened to regain vision, the first person he would like to see, would be Dr. K.J. Yesudas."

10. एक महान गायक होने के साथ–साथ येसुदास जी एक विनम्र और सादगी पसन्द इंसान हैं। अपनी वर्षों की तप, साधना और अर्जित ज्ञान को वे तिरूवनंतपुरम के अपने स्कूल के माध्यम से नई पीढ़ी के साथ साझा करने का काम कर रहे हैं। यह उनकी सामाजिक सोद्देश्यता और जिम्मेदारी का परिचायक है। Boys and Girls from all walks of life converge on this centre for music and learn vocal and instrumental music in Hindustani Carnatic, and Western styles.

11. आदरणीया Padamshri Parassala B. Ponnammal ने पारम्परिक कर्नाटक संगीत को नई ऊंचाईयों तक पहुंचाया है। 92 वर्ष की उम्र में भी, आज जो शक्ति व शांति उनके व्यक्तित्व में हैं, वास्तव में वह उनकी साधना की शक्ति है। उनकी संगीत साधना में ईश्वरीय भक्ति का अद्भुत संगम है। भारत में संगीत को हमेशा अध्यात्म से जोडा जाता है, उससे

ईश्वर तक को जानने, उसकी उपासना का संगीत एक सशक्त माध्यम है। उनका ''गुरुवयूर पुरेसा सुप्रभातम'' सुनना मुझे भी प्रिय है।

12. Her life is a list of 'firsts'. She was the first female student to enroll in the newly started Swathi Thirunal College of Music in Thiruananthpuram during early 1940s. Later she became the first female member of the teaching faculty there. Despite having taught music to thousands of students and disciples, having so many awards and accolades she essentially the same sweet, grounded, utterly unpretentious and always lived a quiet life.

18. प्रवासी सम्मान 2017 से सम्मानित, श्री वी.के. राजशेखरन पिल्लई का मैं अभिनंदन करती हूं। सन् 1979 में मीडिया Executive के नाते मुम्बई में अपने कैरियर की शुरुआत कर उन्होंने सऊदी अरब में व्यापार शुरु किया। आज उनकी 12 (National Fire Fighting Company) कम्पनियां भारत, यू.के., बहरीन, सऊदी अरब व सिंगापुर में काम कर रही हैं। व्यवसायी के तौर पर तो उन्होंने शिखर को छुआ है, परंतु फिर भी वे निरंतर लोक कल्याण के लिए समर्पित होकर कार्य करते हैं और यू.ए.ई में अपने चैरिटेबल कार्यक्रमों के माध्यम से दुःखी एवं जरूरतमंद लोगों के हितों के लिए लगातार काम करते है। यह धर्ममय अर्थशास्त्रयुक्त भारतीय संस्कृति का परिचायक है। श्री वी.के. राजशेखरन जी ने अपने अन्दर परोपकार की इस ज्योति को जलाए रखा है, इसलिए मैं उनका हृदय से साधुवाद करती हूं।

19. मैं ''श्री नारायण ग्लोबल मिशन'' के सभी लोगों का धन्यवाद करती हूं जिन्होने आज इस कार्यक्रम की परिकल्पना कर उसे सुंदर रुप दिया। केरल के समाज की जो कल्पना श्री नारायण गुरु ने की थी, उसमें प्रगतिशील और आधुनिक केरल की तस्वीर आती है। मुझे खुशी है कि आज केरल देश में एक विशेष स्थान रखता है।

20. हालांकि इन महानुभावों की कलात्मकता एवं खूबी ईश्वरीय देन के साथ–साथ उनकी कड़ी तपस्या और साधना का फल है, लेकिन आज इस अवसर पर यही निवेदन है कि वे अपनी काबिलियत और हुनर की इस पवित्र कड़ी को ज्यादा–से–ज्यादा मात्रा में अगली पीढ़ी तक पहुंचाने का हरसंभव प्रयास करें।

धन्यवाद।